

*पुष्यभूति वंश का इतिहास : एक परिचय

पुष्यभूति वंश, जिसे वर्धन वंश के नाम से भी जाना जाता है, प्राचीन भारत का एक महत्वपूर्ण राजवंश था। इस वंश ने 6वीं और 7वीं शताब्दी के दौरान उत्तरी भारत में शासन किया।

उत्पत्ति और नाम:

पुष्यभूति वंश की उत्पत्ति के बारे में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि यह एक स्थानीय क्षत्रिय वंश था। 'वर्धन' नाम इस वंश के शासकों की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा और शक्ति का प्रतीक है।

इतिहास:

पुष्यभूति वंश की राजधानी थानेसर (वर्तमान हरियाणा में) थी। इस वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक प्रभाकरवर्धन था। उसने अपने राज्य का विस्तार किया और अपनी स्थिति को मजबूत किया।

प्रभाकरवर्धन के बाद उसका पुत्र राज्यवर्धन सिंहासन पर बैठा, लेकिन वह जल्द ही गौड़ के शासक शशांक द्वारा मारा गया। इसके बाद हर्षवर्धन 606 ईस्वी में थानेसर के सिंहासन पर बैठा।

हर्षवर्धन:

हर्षवर्धन इस वंश का सबसे प्रसिद्ध और प्रतापी शासक था। उसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जिसमें उत्तर भारत का अधिकांश भाग शामिल था। उसने अपनी राजधानी को थानेसर से कन्नौज स्थानांतरित किया। हर्षवर्धन एक कुशल शासक, योद्धा और विद्वान था। उसके दरबार में बाणभट्ट जैसे प्रसिद्ध कवि और लेखक रहते थे।

हर्षवर्धन के शासनकाल में कला, साहित्य और धर्म का विकास हुआ। उसने बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया और नालंदा विश्वविद्यालय को एक प्रमुख शिक्षा केंद्र के रूप में विकसित किया।

हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद पुष्यभूति वंश कमजोर हो गया और अंततः उसका पतन हो गया।

पुष्यभूति वंश का महत्व:

पुष्यभूति वंश का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इस वंश के शासकों ने उत्तरी भारत में राजनीतिक एकता और स्थिरता स्थापित की। हर्षवर्धन के शासनकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है। इस काल में कला, साहित्य, विज्ञान और धर्म का अभूतपूर्व विकास हुआ।